संतोषी माता का हिंडोला

झूलो संतोषी मां सोने का पालना। मुझ गरीब की टूटी झोपड़िया, गुजर करूं ऐसी राम कुठरिया, आओ-आओ संतोषी मां, भोली मेरी भावना। ग्वाल बाल तेरे गाय चरावें, तेरा नाम लेकर घर को आवें; देखो-देखो संतोषी मां की साधना। एक कोई ग्वाल चरावें, तेरी गैया देख परचैया; पीछे-पीछे चलामन लाय बीच भय आवना। तेरे मंदिर पर पहुंचा आया अचरज छावना। देखो तो जहां सुंदर नारी, कोटि सूर्य सम तेज उजारी; मंदिर में आया क्यों ग्वालबाल कहा तेरी चाहना। तेज निहार ग्वाल घबरायो, मुख ते बोलत वचन न आयो; कहत मुख आई बात मेहनताना दिलवाना। थाल में भरकर चावल लाई, देख ग्वाल मन कुढ़न समाई; कहा दोनों ये मोहि आपुहि मौज उड़ावना। नीचे तलहटी बावड़ी पे आयो, जल में खोल पान अपराध साधना; मंदिर लौट तब आयो द्वार बंद पावना। झूला को झूलनो पर सुनाई, जापे कृपा सो सुने सुखदाई, सोना मिला के दिखलाना जाके सांची भावना। अपने लाल का जंडूला उतारें, माता जी सर्व संवारे वे होय निहाल चरण राखे चाहना॥